सप्तमः पाठः

नीति-नवनीतम्

[महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत का विभाजन पर्वों तथा उपपर्वों में हुआ है। उसका पाँचवाँ पर्व 'उद्योग पर्व' नाम से प्रसिद्ध है। इसके अन्तर्गत 'प्रजागर' नामक उपपर्व समस्त पञ्चम पर्व में रत्नभूत है। इसमें मानसिक क्षोभ से ग्रस्त तथा भविष्य की भयावह स्थिति से त्रस्त धृतराष्ट्र को महात्मा विदुर के द्वारा नीति के उपदेश देने का वर्णन है। उनके द्वारा धृतराष्ट्र को दिया गया उपदेश संस्कृत साहित्य में 'विदुरनीति' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ इसी विदुरनीति के ११ श्लोक संग्रहीत किये गये हैं।

प्रस्तुत पाठ में उपदेश दिया गया है कि प्रिय बोलनेवाले मनुष्य तो सरलता से मिल जाते हैं, लेकिन हितकर बात कहनेवाले अथवा सुननेवाले बड़ी कठिनता से ही मिलते हैं। नम्रता से क्रोध को जीतना चाहिए, सज्जनता से दुष्ट को, दान से कंजूस को जीतना चाहिए। दिन भर में वह कार्य कर लेना चाहिए जिससे रात्रि सुखपूर्वक बीते। व्यक्ति को चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता है और चला जाता है, पहले धर्म के सार को सुनना चाहिए फिर उस पर विचार करना चाहिए, आदि ऐसे ही महत्त्वपूर्ण श्लोकों का संग्रह इस पाठ में किया गया है।]

सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।१।।

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।२।।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।३।।

न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति।।४।।

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।५।।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।६।।

शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः।।७।।

दिवसेनैव तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत्।
अष्टमासेन तत् कुर्याद् येन वर्षाः सुखं वसेत्।।८।।

पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवेन तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।।९।।

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।।१०।।

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।११।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) सुलभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

(ख) न विश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति।।

(ग) वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

२. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ संस्कृत में लिखिए—

(क) त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।

(ख) अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।

(ग) शीलं प्रधानं पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः।।

(घ) पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवेन तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।।

३. निम्नलिखित श्लोक का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए–

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

४. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए—

(क) आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।

(ख) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

(ग) अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।

५. समय के सदुपयोग से सम्बन्धित श्लोक की पहचान कीजिए और अभिप्राय अपने शब्दों में लिखिए।

६. निम्नलिखित वाक्यों को पाठ के आधार पर शुद्ध कीजिए–

(क) आत्मार्थे ग्रामं त्यजेत्।

(ख) सत्येन कदर्यं जयेत्।

(ग) वित्तं यत्नेन संरक्षेत्।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

पाठ की जो सूक्तियाँ एवं श्लोक आपको प्रभावित किये हों, उनकी एक सूची बनाकर कण्ठस्थ कीजिए।

●●●